गॉधी दर्शन

डॉ. एस. एल. साहू
प्राध्यापक वाणिज्य
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

महात्मा गांधी ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक विषयों पर नवीन विचारों से विश्व को प्रभा... किया। उनके विचारों में एक अलग ही दर्शन की झलक देखने को मिलती है। उनके विचार समूह को गांधीवाद अ... गांधी दर्शन का नाम दिया जा सकता है। गांधीजी का पूरा दर्शन नैतिकता की पक्की चट्टान पर आधारित... गांधी दर्शन इस प्रकार है :-

(1) नैतिक मूल्य :-

गांधीजी जीवन भर नैतिक मूल्यों के लिये संघर्ष करते रहे, यहाँ तक कि उनका विचार था कि अनैति... अथवा हिंसा के साधनों द्वारा उन्हें भारत की स्वतंत्रता भी मिले तो वे उसे ठुकरा देंगे।

(2) धर्म और राजनीति :-

गांधीजी का विश्वास था कि धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। बिना धर्म के राजनीति... मृत्युपाश की तरह है, जो कि आत्मा का हनन करती है। इस प्रकार गांधीजी ने राजनीति का भी आध्यात्मीकरण क... डाला। धर्म से अभिप्राय गांधीजी का आडम्बर एवं रीति रिवाज से नहीं था बल्कि ऐसे शाश्वत मूल्यों के अनुपाल... से था जिससे समस्त मानवता का कल्याण हो। इसी मानवता पर गांधी जी का सर्वोदय सिद्धान्त आधारित है।

(3) सत्य और अहिंसा :-

गांधीजी सत्य के पुजारी थे ओर उनके अनुसार सत्य ही ईश्वर है और जो सत्य से जितनी दूर होगा ईश्व... से भी वह उतनी ही दूर होगा। गांधीजी के अनुसार सत्य पर दृढ़ व्यक्ति की हार सम्भव नहीं है, क्योंकि उसके... व्रम्हाण्डीय शक्तियों का समर्थन प्राप्त होता है।

सत्य केवल दिखावे की चीज नहीं है, यह मनसा, वाचा कर्मणा से अनुपालन की चीज है । गांधीजी कि... भी अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सत्याग्रह को अमोघ अस्त्र मानते थे । अन्य प्रकार के अस्त्र असफल हो सकते... हैं किन्तु सत्याग्रह का अस्त्र कभी असफल नहीं हो सकता, क्योंकि यह विरोधी के हृदय पर सीधे वार करता है और... उसे जीत लेता है । गांधी जी के अनुसार बिना खून बहाए सत्याग्रह से आजादी प्राप्त हो सकती है ।

गांधीजी ने सत्य को अहिंसा से जोड़ा। उनका कहना था कि सत्य ही अहिंसा है और अहिंसा ही सत्य है... इनका स्त्रोत प्रेम है । जहॉ प्रेम है वहॉ हिंसा हो ही नहीं सकती। गांधीजी की योजना में सत्य, अहिंसा और प्रेम आपस...

में एक दूसरे से अभिन्न रूप से सम्बन्ध ही नहीं, वे एक प्रकार से एक दूसरे के पर्यायवाची भी है । हिंसा सत्य के विरूद्ध है, क्योंकि यह जीवन को समाप्त करती है । अतः यह असत्य की श्रेणी में आती है ।

गांधीजी की अहिंसा कायरों की अहिंसा नहीं उसमें कायरता एवं भय के लिए कोई स्थान नहीं है, यह वीरों की अहिंसा है, शक्ति और सामर्थ्य रखकर भी जो अहिंसा को अपनाये वहीं अहिंसा में सच्चा विश्वास करने वाला है । गांधीजी कायरता के इतने कट्टर विरोधी थे कि उन्होंने कहा था कि हिंसा और कायरता के बीच यदि उनको चुनाव करना पड़े तो वे हिंसा को अपनाएँगे । अतः गांधीजी की अहिंसा साहस तथा वीरता से परिपूर्ण है ।

(4) समानता :-

गांधीजी ने छुआछूत के विरूद्ध आवाज उठाई और अपने देश से बाहर उन लोगों का नेतृत्व किया जिनका अनेक प्रकार से शोषण हो रहा था । मानव समानता के वे कट्टर हिमायती थे । गोरे और काले का भेद करने वाले गोरों के विरूद्ध उन्होंने डटकर लोहा लिया ।

(5) पूँजीवाद और समाजवाद में सामंजस्य :-

वे पूँजीवाद के विरोधी तो थे किन्तु पूँजीपतियों के नहीं । पूँजीपतियों को नष्ट करके सर्वहारा क्रांति करके समाजवाद या साम्यवाद की स्थापना के वे विरोधी थे । गांधीजी ने पूँजीवाद और समाजवाद में सामंजस्व स्थापित करने हेतु "ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त" सामाजिक चिन्तन के इतिहास को प्रदान किया । इस सिद्धान्त के अनुसार पूँजीपति पूँजी कमाएँ । यदि उनमें योग्यता ओर क्षमता है तो इसका प्रयोग धन कमाने में करें और उसको अपने पास रखे किन्तु इस धन का प्रयोग वे समाज के कल्याण के लिए करें । उनके द्वारा कमाया गया धन उनके पास ट्रस्ट के रूप में रहना चाहिए । उन्हें उसमें से केवल आवश्यक प्रयोग के लिये सीमित धन लेना चाहिये । आवश्यकता से अधिक धन लेना गांधीजी के अनुसार चोरी है । उनके अनुसार पूँजी और श्रम में किसी प्रकार के संघर्ष की आवश्यकता नहीं है, दोनों ही एक दूसरे पर निर्भर है । असली बात यह है कि पूँजीपति श्रमिकों का शोषण न करें। इस प्रकार गांधीजी ने पूँजीवाद ओर समाजवाद के बीच अद्‌भुत सामंजस्य स्थापित किया ।

(6) सादा जीवन उच्च विचार :-

गांधीजी के अनुसार सभी बुराइयों की जड़ धन का संचय है । उनके अनुसार जिस समाज में यह प्रवृति हो उसमें सत्य और अहिंसा का पालन नहीं किया जा सकता । सादा जीवन उच्च विचार ही मनुष्य को मोक्ष प्रदान कर सकते हैं । वे गौतम बुद्ध के इस विचार से सहमत थे कि सुख इच्छाओं की वृद्धि में नहीं बल्कि कमी में निवास करता है ।' इसी से मिला जुला उनका "रोटी श्रम का सिद्धान्त" है । सादा जीवन उच्च विचार के उनके सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य को अपनी जीविका अपने हाथों से श्रम करके कमानी चाहिये । गांधीजी ने उक्त सिद्धान्त को गीता में प्रतिपादित पाया जिसमें कहा गया है कि "जो बिना यज्ञ के खाता है वह चुराया हुआ भोजन करता है। " यज्ञ से अर्थ यहाँ शारीरिक श्रम से है । गांधीजी का पक्का विश्वास था कि जीवन में शारीरिक श्रम के बिना सुख सम्भव नहीं है ।

ISSN 2395-

(7) व्यक्ति की स्वतंत्रता :-

गांधीजी व्यक्ति की स्वतंत्रता को बहुत महत्व देते थे । व्यक्ति की स्वतंत्रता उनके लिये उच्चतम का विषय थी। यदि व्यक्तियों को अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए अवसर प्राप्त नहीं होते तब तक कोई प्रगति नहीं हो सकती। गांधीजी के अनुसार वह समाज विनाश को प्राप्त होगा जहाँ व्यक्ति की स्वतंत्रता और करने की क्षमता को कुचला जाता हो। गांधीजी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ सामाजिक संयम और अनुशासन पर देते थे। गांधीजी अधिकारों के उपभोग के साथ-साथ कर्तव्य पालन की भी बात करते हैं ।

गांधीजी के अन्य विचार जैसे विकेन्द्रीकरण, लघु उद्योगों पर बल, बड़े उद्योगों का विरोध, स्त्री पुरूष समानता आदि है । गांधी दर्शन एक दर्शन ही नहीं यह एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन जीने एवं विश्व शांति प्राप्त करने का एक मार्ग प्रशस्त करता है । गांधीवाद को अपनाने से हमारी बहुत सी व्यक्तिगत और सामाजिक समस्यायें हल हो सकती है, और हम भय, संदेह, रोग, युद्ध और तनाव से मुक्ति पा सकते हैं ।